हिन्दी में जीवन चरित लेखन की पंरपरा हमें आदिकाल से ही प्राप्त होती है।भक्त कवि और उनका रचित साहित्य ही भक्तिकाल की संपदा है। आज हमें किसी आधुनिक रचनाकार की जानकारी के लिए सहज ही सारे साधन उपलब्ध हो जाते हैं किन्तु जब हम मध्यकाल की बात करते हैं तो हमार सामने अनेक समस्याएँ आती हैं। भक्तिकाल का साहित्य किसने रचा ?उस समय का समाज कैसा था? इन भक्त कवियों की रचना का उद्देश्य क्या था? लोक का अपना शास्त्र कैसे निर्मित हो रहा था?. भक्त और भगवान के बीच की कड़ी "भक्ति" को सर्वजनसुलभ बनाने के लिए भक्तों ने किन मूल्यों की स्थापना की ? आदि प्रश्नों के उत्तर हेतु हमें उस युग के विस्तृत शोध एवं अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। भक्त कवियों के संवाद (गोष्ठी , वार्ता) ,जीवन चरित (परचई, भक्तमाल उसकी टीका) फारसी में लिखे दस्तावेज (तजकिरा ,इतिहास ,यात्रा–वृतान्त) आदि स्त्रोतों से हमें यह सामग्री लेनी पड़ती है।भक्तमाल धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ–साथ भक्तकवियों का आलोचनात्मक ग्रन्थ भी है। भक्तमाल से हमें पौराणिक भक्तों की समझ प्राप्त होती है तथा ऐतिहासिक भक्तों के मूल्याकंन से साहित्यिक सामग्री मिलती है। भक्तों के विषय में जो टिप्पणी नाभादास ने की है उसे हम भक्ति कविता के कवियों का आधार स्त्रोत कह सकते हैं।